रामरदश मिश्र के उपन्यासों में चरित्र-चित्रण

शोधार्थी
राजकुमार अर्जुनराव बिरादार
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,
उदगीर जि.लातूर

शोध-निर्देशक
डॉ.संजय गडपायले
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
माधवराव पाटील महाविद्यालय,
पालम जि.परभणी

भूमिका

कथानक के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है जो है वह पात्र-योजना, पात्र-सृष्टि या चरित्रण-चित्रण का होता है। उपन्यासों की मूल संवेदना उसके चरित्रों के माध्यम से ही प्रकट होती है। वस्तुः उपन्यास की कथावस्तु को गति प्रदान करना यह चरित्रों का ही कार्य होता है। उपन्यास में कथानक उपन्यास का मेरुदण्ड है तो चरित्र चित्रण उसका प्राण है। उपन्यास यह मनुष्य के यथार्थताओं से बना एक घर है। इसी कारण प्रत्येक उपन्यास में पात्रों का होना अनिवार्य है। चाहे वे कम हो या जादा हो, धनी हो या निर्धन हो, बुद्धिमान हो या मुर्ख, स्थिर हो या गतिमान हो, सम हो या विषम हो, बिना पात्रों के उपन्यासों की कल्पना करना व्यर्थ है।

उपन्यास साहित्य में पात्रों का विशेष महत्त्व है। उपन्यासकार एक परिवेश जीता है। समाज में लोगों के साथ रहता है। और उसी खुबियों एवं खामियों का चित्रण उपन्यासकार उसे अपने उपन्यासों के लिए पात्र देता है। उपन्यास में आनेवाले पात्र जीवंत होते है। सामान्यतः उपन्यास यह मानव-जीवन का ही चित्रण करता है। उसमें लेखक जो कुछ प्रस्तुत करता है, वह किसी-न-किसी रूप में मानव जीवन से सम्बन्धीत होता है। जैसे-घटना प्रधान हो या चाहे वातावरण प्रधान हो उनका संबंध किसी ऐसे तत्त्व से होता है, जो पात्र के रुप में प्रकट होते हैं। उसे ही पात्र या चरित्र कहते है। चरित्र-चित्रण या पात्रों के माध्यम से ही उपन्यासकार अपनी जीवनुभूति को ही अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

पात्र-सृष्टि एवं परिभाषा

उपन्यासकार अपनी रचना को विशेष सुन्दर, परिपूर्ण बनाने के लिए पात्रों का चित्रण उपन्यास में करता है। उपन्यास अपने आप में एक सृष्टि है। इस सृष्टि में न जाने कितनी घटनाएँ घटती है। इन घटनाओं के जन्मदाता है उपन्यास सृष्टि के पात्र। उपन्यास के पात्र इसी संसार की मिट्टी से बने होते है। चरित्र-चित्रण से तात्पर्य है पात्र या मनुष्य के व्यक्तित्व का आंतरिक या बाह्य स्वरूप। जैसे-आचार-विचार, वेष-भूषा, आकार-प्रकार, रहन-सहन, बोल-चाल आदि कार्य या निजी ढंग पात्र में बहुत कुछ प्रतीत करते है। उपन्यास में व्यक्ति और परिस्थिति के संघर्ष के अध्ययन ने चरित्र के उपन्यासों को जन्म दिया है।

पात्रों की परिभाषा

१) प्रेमचंद के अनुसार-

"उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र कहा है। मैं उपन्यास को मानव-चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्त्व है।"[१]

२) प्रदीपकुमार शर्मा के अनुसार

"कहानी में जो घटनाएँ होती है या घटना विहीन उपन्यासों में, जहाँ मानसिक घटनाएँ या मानसिक, संसार की रचना होती है, पात्र या चरित्र कह सकते है।"[२]

३) मनोविश्लेषक फ्रॉम के अनुसार-

"प्रत्येक व्यक्ति के चरित्र एवं व्यक्तित्व पर उस व्यक्ति के परिवार, समाज, वर्ग, संस्कृति का प्रभाव पडता है। इन सबका मिश्रित प्रभाव उसके चरित्र और व्यक्तित्व को एक ऐसा रूप देता है, उसे विभिन्न प्रतिक्रियाओं को प्रभावी ढंग से करने के योग्य बनता है। उसके प्रत्येक व्यवहार में सामाजिक वर्ग और सांस्कृतिक की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। व्यक्ति के इस प्रकार निर्मित को फ्रॉम ने 'सामाजिक चरित्र' की संज्ञा दी है।"[३]

४) डॉ.मक्खनलाल शर्मा के अनुसार

"उपन्यास में कोई कहानी होती है। उस कहानी में कुछ घटनाएँ होती है। वे घटनाएँ जिनसे सम्बन्धीत होती है या जिनको लेकर उन घटनाओं का घटीत होना दिखाया जाता है, वे पात्र कहलाते है।"[४]

इस तरह उपन्यास में चरित्र-चित्रण कितना महत्त्वपूर्ण होता है। उपन्यास में वस्तुजगत के व्यक्तियों के चरित्र को उपन्यासकार अपने उद्देश्य, दृष्टिकोण तथा कथा की विशिष्ट

योजना के अनुकूल बनाने के लिए विशिष्ट पात्रों का स्वरूप प्रदान करता है। इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषा विवेचनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पात्र या चरित्र-चित्रण उपन्यास का प्रमुख तत्त्व है।

रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आदर्शवादी पात्र

रामदरश मिश्र का उपन्यास 'पानी के प्राचीर' का नायक नीरु यह एक आदर्श पात्र के रुप में दिखाता है। नीरु गरीबी के कारण से उपन्यासकार ने देश, समाज के सभी गरीब मजदूर एवं किसानों की गरीबी का वर्णन किया है। नीरु बचपन से ही नये समाज निर्माण की भावना रखता है। नीरु अपने परिवार को गरीबी से मुक्त कराने के लिए जमींदार राय साहब के यहाँ नौकरी करता है। वहाँ लाचारी और गरीबी का खून शोषण होता है। नीरु यह देखकर राय साहब के यहाँ की नौकरी छोड देता है। नीरु के साथ प्रकृति भी रोती हुई सी लगती है-''खेत रो रहे है। उसका दिल भी रो उठा। नौकरी-नौकरी उसके दिमाग को चाट रही थी।... हुरदेव राय की नौकरी... दो महिने में दस रुपये... दगाबाजी, चोरी... मजुरों का गला काटना... यह सब नहीं हो सकता मुझसे।''[५] इस तरह नीरु राय साहब के यहाँ की नौकरी छोड देकर वह दुसरी नौकरी राजेन्द्र बाबू के यहाँ करता है। यहाँ जमींदार गाव समाज के किसानों का शोषण बडी सफाई से करता है। नीरु की गरीबी में पुरे समाज की गरीबी दिखाई देती हे। नीरु को अपने ही परिवार जैसे गरीब उन झोपडियों के किसान लगते है। ''इन किसानों के घर पर से टुटती हुई एक अर्धनग्न नारी है, जवानी के भार से नाती और अभावों के श्रृंगार से बोझिल एक बेटी है, टूटी मठैया के नीचे एक बडे पेट वाला एक लडका छटपटाकर रो रहा है। आह... उसे घर की याद आ गई... माँ...केशव...लीला,पिता, गरीबी...गरीबी...गरीबी...।''[६]

नीरु के इस प्रकार के संघर्ष को देखकर नीरु के प्रति एक सहानुभूति हो जाती है। इस तरह नीरु और संध्या के प्रेम-प्रसंग को पढकर भी हमारे सामने नीरु एक आदर्श रुप में प्रस्तुत करता है। वह अनेक कष्ट सहकर परिवार का पालन-पोषण करता है। अतः हम यह कह सकते है कि नीरु यह एक मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ, मातृ-पितृ भक्त, आज्ञापालक, ईमानदार, आदर्श भाई, गाव का हित देखनेवाला एवं एक सच्चा प्रेमी आदि कई रुपों में हमें नीरु एक आदर्शवादी पात्र के रुप में दिखाई देता है।

रामदरश मिश्र का दूसरा उपन्यास 'जल टूटता हुआ' का एक आदर्श पात्र सतीश यह हमें बहुत प्रभावित करता है। सतीश भी नीरु की तरह तिवारी से हो रहे अन्याय-अत्याचार के प्रति आवाज उठाता है। सतीश समाज में हो रहे यातना को झेलता है। गाँव की गरीबी को देखकर सोचता है। वह बामन, हरिजन, मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग के लोग सभी भूख और गरीबी के चक्के में बुरी तरह पीस रहे है। सतीश मजदुरों के लिए अदालत में जाता है। शोषकों के विरोध में मुकदमा दायर करता है। और वह मुकदमा भी जीत जाता है। इस तरह सतीश सोचता है-''इस इलाके के बामन, हरिजन, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग सभी भूख और गरीबी के चक्के में बुरी तरह पिस रहे हैं।''[७] इस तरह सतीश अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है। सतीश यह सभी प्रकार की चिंताओं से मुक्त होकर गाँव को अधिक अधिक खुशहाल व समृद्धशाली देखना चाहता है। लेकिन भरकस प्रयासों के बावजूद अन्त में वह टूटकर रह जाता है। सतीश जो आजादी के बाद के जो सपने उसने देखे थे वे पुरे नहीं हो सके। वह अपने दीर्घकालीन संघर्ष की निष्फलता को हरिजन नेता जग्गू से कहता है-''मैंने जो भोग रहा हूँ, भोग रहा हूँ लेकिन चिन्ता इस बात की है कि गाँव का क्या होगा? हम तुम आज है, कल नहीं रहेंगे, लेकिन इस गांव का क्या होगा? ऐसे ही अनेक गावों का क्या होगा?''[८]

इस तरह सतीश अपने गाव के लिए एक आदर्श बनता है। वह संवेदनशील, संघर्षशील, व्यक्तिगत होनी के लाभ के प्रति वह पुरी तरह उदासीन समाज सेवक आदि प्रकार से वह हमारे सामने एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

'अपने लोग' उपन्यास का नायक प्रमोद एक आदर्श वादी पात्र का रूप प्रस्तुत करता है। प्रमोद अपने लोगों से दूर रहकर भी पास रहता है। प्रमोद के घर के लोग भी मुसीबत में प्रमोद को ही याद करते है। परिवार से समय-समय पर पैसे और छोटे भइयों के परिवार पर आई मुसीबतों में आर्थिक सहाय्यता के लिए बार-बार प्रमोद से ही पैसे माँगते हे। इस प्रकार प्रमोद अपने परिवार के साथ घिरा रहता है। ''इतना होने पर भी इन लोगों को झेलते जाने के लिए मैं अपने आपको मजबूर क्यों पाता हूँ, उन्हें झटककर फेंकर क्यों नहीं देता। यही तो मेरी मजबुरी है।''[९]

इस प्रकार रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आदर्शवादी पात्र के रुप में जैसे-'सूखता हुआ तालाब' का नायक देव प्रकाश यह भी अपने गाँव के अन्याय-अत्याचार को विरोध करकर आदर्श बन जाता है। उपन्यास 'रात का सफर' में ऋतु अपने पति दिनेश को छोडकर समाज जीवन को सफल तो नहीं कह सकते लेकिन उसने अपने साहस का परिचय दिया और उसी साहस का आधार मानकर वह आगे के जीवन में संघर्ष करके ही सफलता प्राप्त कर सकेगी यह कहा जाता है कि ऋतु

पाठकों की दृष्टि में एक आदर्श संघर्षशील नारी के रूप में सफलता प्राप्त कर सकेगी। 'बीस बरस' की 'वंदना', 'थकी हुई सुबह' की 'लक्ष्मी', 'बिना दरवाजे का मकान' की 'दीपा' यह अपने जीवन का नया मार्ग खोजती हुये आदर्श स्थापित करती है।

इस तरह के पात्र रामदरश मिश्र के उपन्यासों में आदर्श के अंतर्गत प्रमोद, शील, यश, शंकर, डॉ.गौतम, असलम, शोभा आदि पात्र आदर्शवादी यथार्थ पात्र लगते है।

संदर्भ

१) यशपाल के उपन्यासों में चित्रित पात्रों का स्वरूप विश्लेषण-डॉ.विजयकुमार जाधव, साहित्य सागर, कानपूर, सं.२००५, पृ.सं.१२४
२) राजेन्द्र अवस्थी का कथा साहित्य-डॉ.भाऊसाहेब मा. परदेशी, साहित्य निलय, कानपूर, प्रथम संस्करण २०००, पृ.सं.१७७
३) श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान-डॉ.पी.वी. कोटमे,चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपूर,प्र.सं.२००४, पृ.सं.१२६
४) हिंदी उपन्यास : सिद्धांत और समीक्षा-डॉ.मक्खनलाल शर्मा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.१९६५, पृ.सं.४६
५) पानी के प्राचीर-रामरदश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, तृ. सं.२००८, पृ.सं.१४१
६) वही, पृ.२०६
७) जल टूटता हुआ--रामरदश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं.२००४, पृ.१६
८) वही, पृ.१६
९) अपने लोग-रामदरश मिश्र, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, सं. २००६, पृ.३१५

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com